।। साध लछ को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ साध लछ को अंग लिखंते ||

|| चौपाई ||

आ हे रीत आद अनादी || स्वारथ सबे पुकारे ||
जन सुखराम मिल्याँ सब बंदे || तजीयाँ धेक बिचारे ||१||

जगत में किसीको किसीसे मायावी स्वार्थ रहता तब वह मनुष्य जिससे स्वार्थ रहता उसको बंदन करता याने प्रिती करता और स्वार्थ में जब ठेस पहुँचते दिखती तब जिससे ठेस पहुँचते दिखती उससे वही मनुष्य द्वेष करते दिखता यह रित अनादि से जगत के लोगो मे चल रही है । ||१||

जब लग हेत धेक मिल दोनू || तब लग जक्त कहिये ||
जन सुखराम साध लछ ऐसा || पीयाँ सब तिस छीजे ||२||

जैसा स्वभाव जगत के लोगो में चलता आया है वैसाही स्वभाव जगत से साधू बनने के बाद साधू में चल रहा है मतलब जहाँ स्वार्थ है वहाँ प्रिती है और जहाँ स्वार्थमे नुकसान है वहाँ द्वेष है तो वह साधू जगतके लोगो को भलाई साधू दिखे परंतु साहेब के दृष्टीसे वह साधू नही जगतके बराबर मनुष्य है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतको कहते है की,साधू लक्षण जलके समान रहता । जिसे प्यास लगी है उसकी प्यास जल पीते ही तृप्त होती वैसेही जिसे कालके दु:खमें से निकलकर महासुखके देशमें जाने की प्यास लगी है वह प्यास अगर साधूसे मिटती नही तो वह साधू जगतके समजका है वह साधू साहेबके समजका नही ||।२||

ना काहु सूं बेर दोसती || ओपे घराँ न जावे ||
जन सुखराम जाय आराध्यां || दुतिया भाव न लावे ||३||

सच्चे साधू को किसीको बैर नही रहता तो किसीसे दोस्ती भी नही रहती । इसकारण सबके लिये दुतीया भावसे मुक्त रहते वे किसीके घर स्वयम् होकर कभी नही जाते परंतु उन्हे आदर से किसीने आमंत्रित किया तो वे उसके घर जरुर जाते । तब वे आमंत्रित करनेवाला अमीर है या गरीब उंचे जातका है या हलके जातका है ऐसे दो भाव कभी नही लाते । उन्हें सभी जीव परमात्मा के है,परमात्मा प्राप्त करानेके लिये एक ही अधिकारके है ऐसा दिखता । माया कम जादा है इसलिये साहेब पानेके लिये कम जादा अधिकारी है,यह झूठी सोच कभी मानते नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसी झूठी सोच जिसे आती वह साधू या गुरु जगतके लोगोके स्वभावका है याने जगतके बराबर का है साहेब के स्वभाव के पहुँचका नही । ||३||

जब लग बुरी भली सब भ्यासे || काम क्रोध अंकारा ||
जन सुखराम तांहा लग भै हे || त्रुगटी तत्त बिचारा ||४||

जब तक साधु जगत के हंसो को माया कम जादा तोलता और उस साधूको जगत के

 ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। राम

मनुष्य माया के अनुसार बुरे भले दो भाव भ्यासते और उस साधू के घट में काम,क्रोध,लोभ,मोह, मत्सर,अहंकार ओतप्रोत भरे रहते तब तक उस साधूने त्रिगुटी तत्त याने सतस्वरुप ब्रम्ह नही पाया यह जगतके जीवोने ज्ञान से बिचार करना और उस साधू को खुद का आवागमन का भय है यह समजना ।।।४।।

ऊपजे खरी जरे सो मांही ।। से नर साध कहिजे ।।
जन सुखराम सुणत सम बोले ।। जक्त बराबर दीजे ।।५।।

साधू की किसीने निंदा की तो उस साधू को निंदक के प्रती कुछ समय के लिये नाराजी जरुर उपजती परंतु वह नाराजी सहज मे ही क्षिण हो जाती वही साधु साहेब के देश का साधू है यह समजना । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जो साधू उसकी निंदा सुनतेही अहम के साथ क्रोध से उबर आता वह साधू जगत के समज के बराबर का है । उसमे साहेब के गुण नही है,माया के गुण है,काल के गुण है यह ज्ञानसे समजना ।।।५।।

सब सूं हेत बेर नही बंधे ।। निर पख ज्ञान बिचारे ।।
जन सुखराम सूर के ऊदै ।। ठगे मुसे कुण मारे ।।६।।

जिस साधू को किसीसे प्रिती या बैर नही उपजता तथा जो सभी में ओतप्रोत भरा है ऐसे निरपक्ष सतस्वरुप ब्रम्ह के ज्ञान में खुद लिव लगाके रहता और जगत को भी लिव लगाके रखता ऐसे साधू में काम,क्रोध,अहंकार यह ठग कभी नही उबरते,इन साधू की स्थिती जैसे सुरज उगने के बाद उग ठगाके गर्दन मरोड्कर मार नही सकते इसप्रकार सत्तज्ञान वैराग्य से बनी रहती ।।।६।।

निरपख साध पखे बंध लोई ।। धेक करे सोदाणो ।।
जन सुखराम मुख सूं मीठा ।। कपटी नरक बखाणो ।।७।।

सच्चे साधू निरपक्ष रहते तथा जो माया का पक्ष रखते वे साधू जगत के लोगो समान मायावी स्वार्थ के रहते,विज्ञान वैरागी नही रहते । जो साधू राक्षसो के समान जगत को मायासे देखकर द्वेष करते वे राक्षस के स्वभाव के है समजना । जो साधू जगत के कपटीयो के समान जगत से मिठा बोलते और कपट रखके जगत से धोका करते वे नर कपटी है । ऐसे पक्ष रखनेवाले, द्वेषी,कपटी इनको साहेब मिला नही यह समजना ।।।७।।

हरजन हेत राम सूं लागा ।। दूजी सेझ सभाई ।।
जन सुखराम चाय बिन दुबध्या ।। काहाँ बिराजे आई ।।८।।

जो हरिजन है उन्हें सिर्फ और सिर्फ रामसे प्रिती लगी रहती और उन्हें मायावी वासनिक

वस्तूवो से कोई लगाव नही रहता । माया में वे सहज जिते । उनमे माया की चाहना नही रहती इसलिये उनमे दुबध्या याने माया पानेका दु:ख नही रहता । उन्हें साहेब पाने का आनंद रहता ।।।८।।

चरचा सकळ पखा की लावे ।। खांचे आप तणी रे ।।

जन सुखराम चाय को कोठो ।। अंतर चाय घणी रे ।।९।।

जो साधू चर्चा में याने ज्ञान में माया का पक्ष खिंचखिंच कर याने तान-तानकर लाता । वह साधू माया के चाहना का कोठार है याने भंडार है ऐसे समजो मतलब उसके हंस के हृदय में काल के मुख मे रहनेवाली माया की चाहना ही चाहना भरी है ऐसा समजना ।।।९।।

जन की चाय दाय सब ऊठी ।। अंतर ध्यान चढावे ।।
जन सुखराम सूर के ऊगे ।। दुबध्या रात न आवे ।।१०।।

सच्चे साधू की मायावी चाहना की आग सभी उठ गयी रहती याने खतम् हुई रहती । उसके हंसके हृदयमें सिर्फ साहेबका ही ध्यान रहता । जैसे सुरज उदय होने पे रातके अंधेरेके कष्ट नही रहते वैसेही सतस्वरुप ज्ञान हंसके हृदयमें प्रगट होनेसे वासनिक माया के चाहना के दु:ख नही रहते ।।।१०।।

घ्रित खांड गुळ नाज किराणो ।। ऊच निच कुल होई ।।
जन सुखराम हीर कण लेणा ।। जात भेद नहीं कोई ।।११।।

जिस संत की माया के चाहना की आग उठ गई है और जिसका ध्यान गिगन में है । ऐसे ही स्थिती बनाने की जिसकी चाहना है उसने वह संत निच कुल का है या उंच कुल का है यह न देखते उससे साहेब पाने का भेद लेना चाहिये । जगत का दाखला देते हुये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बताया की,घी,शक्कर,गुड अनाज यह किराना लेने वक्त उंची जात के मनुष्य से ही लेना चाहिये परंतु हिरा लेना है तो उंच-निच जात न देखते जहाँ मिलता वहाँ लेना चाहिये । क्योकि हिरा किराना के दुकान के समान गली गली में नही रहता,उस हिरे का कोई एखाद बेपारीही रहता । इसीप्रकार माया की करणीयाँ बनानेवाले गली गली रहते वहाँ उंच ब्राम्हीन है या नही यह देखके ही करणी क्रिया धारन करनी चाहिये परंतु साहेब प्राप्त किये हुये साधू गली गली नही रहते,बिरले रहते और वे निच जातके भी रहे तो भी उसमे निच माया नही रहती उसमे सभी साहेबके ६४ के ६४ अंग ओतप्रोत आये रहते ।।।११।।

हीरो जाय बणे ताहां लीजे ।। क्हा जात सूं कामा ।।
जन सुखराम लेत उजियालो ।। धरे नख चख रामा ।।१२।।

हिरा जहाँ मिला उससे लो,उसमे जात-पात का काम मत रखो । वह हिरा लेते ही घर में उजियाला देगा इसीप्रकार सतगुरु जो भी जात का है,वह जातपात मत देखो और उस साधू से रामजी का भेद लेकर घट में नख से लेकर चखतक प्रकाशमान करा लो ।।।१२।।

सौदे फरक फेर हे अेतो ।। काची पक्की रसोई ।।
जन सुखराम बिप्र ज्हाँ जिमे ।। बणत असल घर माई ।।१३।।

दुजा दाखला देते हुये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,कच्ची पक्की रसोई

का फरक जगत में चौडे याने सबको मालूम है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे की ब्राहीन कच्ची रसोई याने दाल,चावल,रोटी कढ्ढी,सब्जी यह उंचे घरमे भी अच्छे ब्राम्हन के हाथसे तैयार की हुयी खाते ।।।१३।।

लाडु पेडा सरस जलेबी ।। बिप्र जीम सब जावे ।।
जन सुखराम भेद भिन नाही ।। जे सतगुरू रूप कहावे ।।१४।।

परंतु वही ब्राम्हण लड्डू,पेढा,रसदार जलेबी ऐसी पक्की रसोई सभी जगह ग्रहन करते । तब वे उंचे ब्राम्हीण के घर की रसोई है या निच घर की रसोई है यह भेद भीन नही रखते । इसीप्रकार साहेब प्रगटे हुये सतगुरु का रुप है ।।।१४।।

हद्द मे गुरू परे सो सतगुरू ।। तंहाँ कारण नही कोई ।।
जन सुखराम धात तो सब ही ।। कनक काट नही होई ।।१५।।

हद याने जिसे काल खाता ऐसे माया के मुख में रखनेवाले गुरु और सतगुरु याने बेहद याने काल के परे के सतपद में पहुँचानेवाले गुरु । ऐसे कालके परे सतमें पहुँचानेवाले

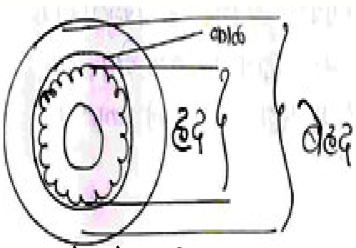

गुरुकी जातपात देखने का कारण ही नही रहता,क्योंकी वह सतगुरु माया नही रहता,वह सतगुरु साहेब रहता । जैसे–जगत में धातू अनेक प्रकार के है वैसे माया के गुरु भी अनेक प्रकार के है और जैसे कंचन छोड्के सभी धातूवोंको काट लगता,वैसे इन गुरुवोको भी काल खाता परंतु जैसे कंचन यह भी धातू है,उसे कभी काट नही लगता इसीप्रकार सतगुरुको त्रिगुणी मायाकी चाहनाद्वारा या काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सरद्वारा काल का काट नही लगता ।।।१५।।

दूजा गुरू नीर सम कहाये ।। धरम करम सब पाले ।।
जन सुखराम अगन ज्यूं सतगुरू ।। असुभ सुभ सब जाळे ।।१६।।

मायावी गुरु मायावी धर्म व कर्म कराते मतलब कर्म से मुक्त नही कराते । ये गुरु जैसे जलसे बरतन का तेलसे जडा हुवा किट साफ नही होता ऐसे जल के समान रहते । सतगुरु अग्नी समान रहते । जैसे अग्नी बरतन का किट जलाकर पुरा साफ करता,जरासा भी किट नही रहने देती वैसेही वे सतगुरु जीव के सभी(अच्छे,बुरे)कर्म जला देते ।।।१६।।

दूजा गुरू जक्त सूं मिलता ।। सब मिल ध्रम ऊचारे ।।
जन सुखराम सतगुरू असे ।। अेको ब्रम्ह बिचारे ।।१७।।

सतस्वरुप के गुरु छोड्कर अन्य मायाके सभी गुरु जब जगतसे मिलते तब कालके मुखमें रहनेवाले त्रिगुणीमाया के न्यारे–न्यारे सभी धर्म एकी समय उच्चारते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जब जगतको सतगुरु मिलते तब जो कालके परेका सभी जगत का एकमात्र ब्रम्ह है । जो कल भी था,आज भी है,कल भी रहेगा,जो काल के परे महासुखका दाता है उसीका ज्ञान और विधी चलाते,कालके मुख में रहनेवाला एक भी

ज्ञान नही चलाते ।।।१७।।

गुरू सो ज्ञान बिचारे सारा ।। निरख परख ले चाले ।।
जन सुखराम सतगुरू असा ।। भली बुरी सब पाले ।।१८।।

त्रिगुणीमाया के गुरु माया के शुभ तथा अशुभ विधीयाँ मायाके ज्ञानसे निरख परखके याने तटोल-तटोलके धारन करते । जिस विधीयोमे आगे त्रिगुणी माया से सुख है उन विधीयोको ही धारन करते और जिन विधीयोमें आगे दु:ख है उनका सदा त्यागन करते । परंतु सतस्वरुपी सतगुरु त्रिगुणी मायाकी शुभ या अशुभ ऐसी एक भी विधी नही मानते । उन्हे ये सारी विधीयाँ चाहे शुभ रहो या अशुभ रहो यह कालके मुख का ही ग्रास है,ऐसा ज्ञान से नित्य दिखता ।१८।

सब सूं मेल रहे सो दागा ।। देव दरस अवतारा ।।
जन सुखराम अगन मुख डाऱ्यां ।। नही रहे मेल लगारा ।।१९।।

इन मायावी गुरु से मायावी देव तथा अवतारो के दर्शन जरुर होते परंतु इन मायावी देवतावो से जीवके मन,५ आत्मा तथा कर्म कभी नही जलते । जैसे पानीके धोंनेसे बरतन को चिटका हुवा तेलका मैल तथा डाग बने के बने ही रहता । वह डाग पानीसे कभी नही निकलता परंतु अग्नी में वह बरतन डालते ही डाग तुरंत गल जाता । इसीप्रकार सतगुरु के शरण में जाते ही, सतस्वरुप परमात्मा का घट में ही दर्शन होते और वह परमात्मा प्रगट होते ही जीव के सभी मन,५ आत्मा तथा सभी कर्म के मैल तथा डाग सदा के लिये जला देता ।।।१९।।

सत्तगुरू गुरू आँतरो जोजन ।। रात दिवस ज्यूं होई ।।
जन सुखराम हद्द के गुरू सूं ।। तन मध समज न कोई ।।२०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत को कहते है की,सतगुरु और हदगुरु इनमे अमावस्या की अंधेरी रात तथा पूरा प्रकाशमय दिन इन में जैसा अंतर है ऐसा अनंत योजन का अंतर है । हदगुरु को तन के बाहर की क्रिया-करणी की समज रहती,तनके अंदर की साहेब की समज नही रहती और सतगुरु को नख से चखतक तन मे साहेब दिखता ।।।२०।।

सत्तगुरू सेन लखे सब न्यारी ।। खंड ब्रम्हण्ड सब सोझे ।।
जन सुखराम तन मध साहिब ।। निरख निसो दिन खोजे ।।२१।।

सतगुरु खुद के तन को खंड-ब्रम्हंड बनाते और रात-दिन साहेब की सभी न्यारे न्यारे चिन्ह तन में खोजते ।।।२१।।

सातूं गरू बसत यूं न्यारा ।। सुणज्यो सकळ संसारा ।।
जन सुखराम भेद सब भाकूं ।। गरू गरू का न्यारा ।। २२ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी संसारीयो को कहते है जगत में सात प्रकाश के

गुरु सदा रहते । इन सातो न्यारे न्यारे गुरु के भेद न्यारे न्यारे कैसे है यह बता रहे है ।।।२२।।

प्रथम गुरू सो पिता कहावे ।। लिंग बिज नाभ मे न्हाखे ।।
दूजी माय सत्त कर भाखे ।। नव मास ग्रभ मे राखे ।।२३।।

प्रथम गुरु यह पिता है । उनसे जीव को माँ के गर्भ में वास मिलता । दुजा गुरु माता है जो ९ माह तक जीव को गर्भ में रखती ।।।२३।।

तिजा गरू ग्रभ सूं झेले ।। दाई जतन करे भू मेले ।।
चोथा गुरू ब्राम्हण भाई ।। दिया नांव जक्त के माई ।।२४।।

तिजा गुरु दाई है जो जीव के देह को गर्भ से झेलती और धरती पे रखती । चौथा गुरु ब्राम्हण भाई है जो शरीर को जगत में पहेचान के लिये देह का नाम देता ।।।२४।।

खवास गुरू सब केस संवारे ।। मस्तक हाथ मुंड पर धारे ।।
कन फूंका षट गुरू कहावे ।। कर माळा अवतार जपावे ।।२५।।

पाचवा गुरु न्हायी है । वह हंसके देहके सरपर हाथ घुमाघुमाकर बाल सुंदरतासे सवारता । छटवा गुरु कानमें मंत्र का उच्चारण करके फुँक मारता और हाथ में अवतारो की माला जपने लगता ।।।२५।।

सत्तगुरू ब्रम्ह मिलावे मांही ।। भव बंधन जुग भ्यासे नांही ।।
निरभे जाग जाहाँ गुर मेले ।। काळ क्रम कुबुध सब पेले ।।२६।।

सातवा गुरु घटमें सतस्वरुप ब्रम्ह मिला देता और भवसागरके बंधनमें डालनेवाला मन तथा ५ आत्मा खतम् कर देता जिससे भवबंधन का डर भासता नही । यह सतगुरु जहाँ काल नही ऐसे भयरहीत सतस्वरुप ब्रम्ह के जगह पहुँचा देता तथा कालके मुखमें रखनेवाले काल कर्म तथा काळ कुबुध्दी सब खतम् कर देता ।।।२६।।

रमता को गुर भेद बतावे ।। तां संग होय गिगन घर आवे ।।
कूंची ज्ञान गम सब देवे ।। जडीया ताक खोल सब ले वे ।।२७।।

यह सतगुरु जो सभी घटमें रम रहा है ऐसा रमते राम का घटमे ही भेद बताता और हंस को रमता राम के साथ गिगन घर पहुँचा देता । यह सतगुरु गिगन मंडल में पहुँचने के लिये शिष्य को ज्ञान के गम की सभी कुंचीयाँ देता जिससे शिष्य गिगन मंडल के ओर आनेवाले स्थान स्थान के सभी दरवाजे खोल लेता ।।।२७।।

सतगुरू मिल्या भ्रम सब भागे ।। अणभे ज्ञान आतमा जागे ।।
ने:चळ होय चळे जन नाही ।। सो करतानर पावे माही ।।२८।।

ऐसे सतगुरु मिलने पे त्रिगुणी माया के सभी भ्रम,वेद,शास्त्र,पुराण आदि भाग जाते है और भयरहीत देश का विज्ञान ज्ञान आत्मा में याने हंस के हृदय में जागृत होता । माया के सभी भ्रम भाग जानेसे और हंसमे सतविज्ञान प्रगट होने से हंस निश्चल हो जाता,जरासा

भी माया में चलायमान होता नही जिससे हंस के घट में सतस्वरुप कर्ता प्राप्त होता ।।।२८।।

कानाँ सुणें दिष्ट सूं देखे ।। सो सब बात तन मे पेखे ।।
तीरथ बरत धाम सब देवा ।। घर अस्थान तन मे सेवा ।।२९।।

गुरुकी जो जो बाते कानसे सुनी तथा दिष्टसे देखी वे सभी बाते याने तिरथ,व्रत,धाम,देवता अवतार उनके घर,उनके स्थान,उनके सेवा की पहुँच शिष्यको उसके घटमें ही बताते । ।२९।

सतगुरू मिल्या ईसी बिध पावे ।। ओ तन खोज अगम घर जावे ।।
जन सुखराम ओर गुरू सारा ।। फळ दायक सब काय बिचारा ।।३०।।

सतगुरु मिलने पे हंस तन में देवी–देवतावो के तथा अवतारो के सभी स्थान खोजकर महासुख के अगम घर जाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है मायाके अन्य गुरु जो माया की करणीयाँ करवाते उसके काल के मुखमेके मायावी सभी फल प्राप्त करा देते परंतु काल के परे का अगम घर प्राप्त नही कराते ।।।३०।।

सत्तगुरू सरण मोख घर पावे ।। आवा गवण रोग सब जावे ।।
गुरू सत्तगुरू अंतर बोहो भाई ।। ते समज्या ज्याहाँ धिन कमाई ।।३१।।

सतगुरुके शरणासे आवागमन का रोग मिटता और महासुख का परममोक्ष प्राप्त होता । ऐसा काल के मुख में रखना और काल के मुख से निकालकर महासुख में पहुँचाता ऐसा भारी अंतर मायाके गुरु और सतस्वरुपके सतगुरु में है । यह अंतर जिसे समझा और यह अंतर समझकर जिसने सतगुरु की विधी धारण की उसकी धन्य कमाई हुई ।।।३१।।

गुरू तो सकळ ज्हान के होई ।। सत्तगुरू सरण दुलभ सिष जोई ।।
दूजा गुरू जनम जुग लारे ।। लख चोरांसी नांही निवारे ।।३२।।

त्रिगुणी माया के गुरु तो सभी जगत के मनुष्य को होते आये है परंतु सतगुरु का शरणा मिला हुवा मनुष्य याने शिष्य दुर्लभ रहता । ऐसे दुजे गुरु का शरणा आदि मे जबसे होनकाल पारब्रम्ह छोडा तबसे हर मनुष्य को मनुष्य योनी मे एक से अधिक बार मिले है परंतु इन किसी गुरु से चौरासी लाख योनी का फेरा आज दिनतक छुटा नही ।।।३२।।

जन सुखराम सत्त गुरू मेळा ।। नर देह पाय मिले पद भेळा ।।
आवा गवण ब्होर नही आवे ।। पण भाग बिना सत्तगुरू नही पावे ।।३३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा यह लक्ष्य चौरासी योनीका फेरा मनुष्य को सतगुरु मिलने पे ही छुटता । ऐसे सतगुरु मनुष्य देह पाने पे जीव को मिले । तो वह ८४ लाख योनीके आवागमन में कभी नही आता तथा महासुखके पदमे सदाके लिये जाता परंतु ऐसा सतगुरु भाग्य के बिना नही मिलता ।।।३३।।

बिना भाग कोई नही पावे ।। सतगुरू हर दिदारा ।।

जन सुखराम सुखी नर थोडा ।। दु:खी घणा शिर मारा ।।३४।।

ऐसा परमसुख के पदमें पहुँचानेवाला सतगुरु–हरजी का शरणा भाग्य के बिना कोई नही पाता । ऐसा शरणा पाकर महासुखको पानेवाले मनुष्य थोडे रहते और कालके मुखमें रहकर अनंत महादु:खो का मार जीव के सिरपर रखकर सहनेवाले अनंत रहते ।।।३४।।

गुर सूं मिल्याँ चानणो अेतो ।। दीपक बाट जगाई ।।
जन सुखराम सत्त गुरू मिलीयाँ ।। सूर ऊदे जुग माई ।।३५।।

घोर अंधेरी रातमे दिपक की बत्ती जगाने से जितना प्रकाश होता उतना प्रकाश त्रिगुणीमाया के गुरुसे जीवको होता याने जीवको त्रिगुणीमायासे अल्पसुख होते परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जगत मे सुरज उगने पे अंधेरी रात जैसे नष्ट हो जाती वैसे जीव को सतगुरु मिलने पे काल के महादु:ख मिट जाते और आनंदपद के महासुख मिलते ।।।३५।।

कनिष्ट गुरू ओस को पाणी ।। कहे पण प्यास न जावे ।।
जन सुखराम सत्तगुरू सायर ।। मिलतां प्यास बुझावे ।।३६।।

ओस के पानी को भी मिठे पानी के समुद्र के पानी समान पानी ही कहते परंतु ऐसे पानी से कोई प्यासा मनुष्य प्यास मिटाना चाहता तो उस प्यासे की प्यास जरासी भी मिटती नही । उसके जगह मिठे पानी के समुद्र के पानी को पिते ही प्यास मिट जाती । इसीप्रकार कनिष्ठ गुरु याने त्रिगुणीमाया के गुरु से काल का दु:ख जरासा भी मिटता नही। परंतु सतगुरु मिलते ही युगानयुग से जखडा हुवा आवागमन का दु:ख सहज में मिट जाता ।।।३६।।

देवळ देव देवरा बंधिया ।। तीरथ जक्त चलीरे ।।
जन सुखराम कहे सब सुण ज्यो ।। पूजा सबी भली रे ।।३७।।

धरती पे अनेक देवल बने है । उसमे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शंकर आदियो की मूर्तीयोंकी स्थापना की है । ६८ प्रकार के तीर्थ बनाये है । इनकी पूजा में सभी जगत लगा है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को कहते है कि ये सभी पूजा अच्छी ही है ।।।३७।।

पूजा राम किस्न वां कीनी ।। से अवतार कहाया ।।
जन सुखराम वशिष्ट गुरू रे ।। दुर्वासा पूजाया ।।३८।।

परंतु रामचंद्र और कृष्ण जिन्हे सभी जगत विष्णू का अवतार समजते उन्होंने जगत के लोगो समान देवलो मे जाकर ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा शक्ती की पूजा नही की तथा ६८ तीर्थो मे से कोई तीर्थ पे नही गये । उन्होंने याने रामचंद्रने वशिष्ठ गुरु और कृष्ण ने दुर्वासा गुरु की पूजा की इसका क्या कारण ? ।।३८।।

पांडु पांच युधिष्टिर राजा ।। पूजा अखंड चलाई ।।

जन सुखराम कहे सब सुणज्यो ।। पूजा टेल गुण भाई ।।३९।।

युधिष्ठिर राजा सही पांचो पांड्वोने गुरुकी अखंडीत पूजा चलाई । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को कहते है की,गुरु की पूजा तथा सेवा करना यह सही है ।।।३९।।

पूजा पाँण टेल सब सांई ।। भाव बाढ सो दिया ।।
लव समसेर साच कर पक डी ।। क्रम कतल सब किया ।।४०।।

पत्थर की पुजा और टहल(सेवा)यह भाव बढानेके लिए हैं । (जैसे तलवार पत्थर पर घिसनेसे उसे धार आ जाती,वैसे ही पत्थर की मुर्तिको पुजनेसे उस देवको भाव आता ।)वैसेही तलवार को धार आई,याने उससे कर्म की कत्तल कर सकते ।(ऐसा ही गुरूसे भाव आया,तो पत्थर पर घीसे हुए तलवार जैसा भाव भक्ती को वाढ(धार)आ जाती,गुरूसे भाव आने से कर्मो की कत्तल हो जाती ।)लव लगाना ही तलवार है,(उस लवको)विश्वास से पकडी,तो सब कर्मो की कत्तल हो जाती ।। ४० ।।

हाथ पाँव मुख नेण नासका ।। श्रवण संग कमावे ।।
जन सुखराम ऊपजे तां संग ।। ऊलटा फेर गमावे ।।४१।।

यह कर्म हाथ,पैर,मुख,आँखे,नाक तथा श्रवणके साथ कमाये जाते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जिसके साथ ये कर्म उपजे उसीके सहाय्य से गमाते आते ।।।४१।।

चरण पाँव साधाँ दिस धारे ।। कर सूं टेल करिजे ।।
जन सुखराम ज्ञान सुण सर्वण ।। पूजा शीश धरीजे ।।४२।।

चरण पाव से कमाये हुये होनकालके निच-उच कर्म सतस्वरुप के साधूके दर्शन जानेसे मिट जाते है । हाथसे होनकालके निच-उच किये हुये कर्म सतस्वरुपी साधूकी हाथसे सेवा करने से खत्म हो जाते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है श्रवण से सुन-सुनकर होनकाल के बने हुये कर्म कर्ण से सतस्वरुप के ज्ञान सुनने से मिट जाते है ।।।४२।।

नेणा निरख साध की सूरत ।। रसणा राम रटावे ।।
जन सुखराम अेई मिल कीया ।। अेई करम कटावे ।।४३।।

नयनो से होनकालके किये हुये कर्म सतस्वरुपी साधू की सुरत निरखने से मिट जाते । जीभ ने बोल के किये हुये कर्म जीभ से रामस्मरण करने से मिट जाते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है आवागमन मे डालनेवाले सभी होनकाल के उच-निच कर्म इन सभी ने मिल के किया है । जैसे इन सभी ने होनकाल के मिल के कर्म किये उसीप्रकार ये सभी मिलकर सतसाहेब साधू के सत्ता से करम कटाते ।।।४३।।

अेसी सुंज मिले सब सारी ।। सो नर भक्त कमावे ।।

के सुखराम हात कर ऊपर ।। रसणा राम धियावे ।।४४।।

ऐसी कर्म कटानेकी पूरी समज जिसे आती है वही मनुष्य साईकी भक्ती कमाता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसे मनुष्य हात उपर करके रसनासे राम रटन करते है । ।।४४।।

कवत ।।

सील साच संतोष ।। भाव प्रभाव पिछाणो ।।
प्रेम प्रित चित लीन ।। ज्ञान आतर मन जाणो ।।४५।।

१) शील याने ब्रम्हचर्य या पुरुष-पत्नी व्रत,स्त्री-पतीव्रत । २) सांच-विश्वास-अच्छा हुवा तो साहेब ने किया और बुरा हुवाँ तो मै कारण हूँ । ३) संतोष साहेब ने दिया है उसमे खुश रहना । कम है यह महसूस नही होना और कम है इसलिये त्रिगुणी माया से भाव नही रखना । ४) भाव-सतगुरु ही परमात्मा है यह भाव रखना । ५) परभाव-सभी जगह के हंस परमात्मा के हसं है यह समजके उन सबसे प्रिती करना । ६) प्रेम-सतगुरु को परमात्मा समजके सतगुरु से प्रेम करना । ७) प्रीत-सतगुरु से प्रिती करना । ८) चित्तलीन-विज्ञान वैराग्य मे चित्तलीन रहना । त्रिगुणी मायावी वासना मे चित्तहिन रहना । ९) ज्ञान-सतस्वरुप के ज्ञान से चलना । १०) मन आतुर-साहेब पाने के लिये निजमन आतुर रहना ।।।४५।।

समता समज बिचार ।। हेत सब कूं सुख दाई ।।
नेम गरिबी नांव ।। लगन सिंवरण सूं भाई ।।४६।।

११) समता-मेरा हंस और जगत के सभी प्राणीमात्र के हंस मे सरीखे समजना । माया को देखकर कम-जादा नही समजना । १२) समज-सभी सुखोका कर्ता साहेब और सभी दु:खो का कर्ता मै याने मेरा मन यह समज रखना । १३) बिचार-सतस्वरुप के बिचार रखना । वासनिक त्रिगुणीमाया के बिचार नही रखना । १४) हेत-सभी जीवमात्र से प्रेम रखना । १५) सभी को सुख देना-किडी से कुंजर तक अपने बराबर समजना और सभीको सुख देना । १६) नियम-गर्भ में साहेबसे कौल किया उन नियमो से रहना । १७) गरीबी-हंस को स्वयम्का अस्तित्व नही रहना । जो है वह परमात्मा ही दिखना । १८) नाम-सतस्वरुप निजनाम से लीव रखना । त्रिगुणीमाया के नाम को त्यागना । १९) सुमिरन-सतनाम के स्मरण करने की तलब रखना ।।।४६।।

बिरहे बसे बेराग ।। त्याग सूरा तन आवे ।।
अे अंग मिल चोविस ।। संत सुखराम कुवावे ।।४७।।

२०) बिरह-परमात्मा से अनंत युगो से बिछडने का दु:ख होना और मिलने के लिये आतुर रहना । २१) वैराग्य-विज्ञान वैराग्य रहना । २२) त्याग-त्रिगुणीमाया,५ विषयो के चाहना का त्याग करना । २३) शुरविरता-याने सतस्वरुप परमात्मा पाने के लिये शौर्य से

होनकाल से लढने का बल रखना । ऐसे यह २४ स्वभाव मिलकर एक जगह हुये याने वह हंस संत है यह समजना ।।।४७।।

धीरज धरम ध्यान ।। भेद भगवंत घट होई ।।
दया दान दिल पाक ।। नेम परमारथ सोई ।।४८।।

१) धीरज–त्रिगुणीमाया के बडे चरित्र देखकर साहेब के प्रती भाव कम नही करना । २) धर्म–जो कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा,ऐसा त्रिकाल सत्य है तथा जिसके आधार से होनकाल,त्रिगुणी माया तथा जीव सुख भोग रहे उसका शरणा रखना यह धर्म । ३) ध्यान–सदा त्रिकाल सत्य परमात्मा का ध्यान करना । ४) भेद–भगवंत को घट मे प्रगट करने का भेद होना । ५) दया–जैसे आवागमन से निकलने को किसी हंस ने मेरे हंस पे दया की जिस कारण मै आवागमन से मुक्त हुवा वही दया अन्य मनुष्य जीवो के प्रती रखना । ६) दान–परमात्मा का स्मरण कर रहा है या परमात्मा के स्वभाव से जी रहा है ऐसा जीव किसी कारण खाने–पिने से लेकर ग्रहस्थी जीवन के अन्य जरुरतवाली वस्तू न होने कारण दु:खी है,ऐसे हंसको जरुरत पुरती वस्तू पुराना तथा किडीसे लेकर कुंजर इनपे अन्न तथा रहनेके लिये जगह,थंडी मे कपडे का दान करना । ७) मन पवित्र रखना(दिलपाक)–याने निजमन पवित्र रखना,विकारी नही रखना । ८) नियम रखना–सतगुरु ने धिन धिनता के अंग मे तथा मदभागी ध्रिग ध्रिगता के अंग मे जो नियम बताये वैसे जीवन बिताना ।।।४८।।

सितळ सेज सुभाव ।। बात मीठी मुख बाणी ।।
कोमलता ब्हो लीन ।। भेद सब लियो पिछाणी ।।४९।।

९ सितल–शांत रहना । १०) सहज स्वभाव–साहेब जैसा रखेगा वैसा रहना । ११) मुखसे मिठी बाणी बोलना । १२) कोमलता–जीवो के प्रती कोमल रहना । १३) अतिलीनता–सतगुरु से तथा सतस्वरुपी संतो से अतिलीन रहना । १४) सब भेद पहचान लेना–याने जीव क्या, मन क्या,५ आत्मा क्या,त्रिगुणीमाया क्या,होनकाल क्या,सतस्वरुप साहेब क्या?यह सब भेद पहचानना ।।।४९।।

पत पुरण प्रतीत ।। मत्त मन कूं बस किया ।।
अे अंग मिल सुखराम ।। साध कूं साहिब दिया ।।५०।।

१५) सतगुरु की और रामजी की पुरी पत रखना । १६) प्रतीती रखना–याने गुरु और रामजी पे पुरा विश्वास रखना । १७) मन के मत को वश करना–ये ऐसे स्वभाव साधू को साहेब बक्षिस करता ।।।५०।।

जरणा जप सधीर ।। सरम साहिब दिस साची ।।
सत्तगुर मेर म्रजाद ।। ज्ञान बिन करे न काची ।।५१।।

२०)जरणा २१)जप–साहेब के नाम का जप करना । २२)सधीर–२३)शरम–जप हुवा

|| राम नाम लो, भाग जगाओ ||

नही, गुरु कार्य हुवा नही इसकी शरम रखना । २४)साहेब का विश्वास रखना । २५)सतगुरु की मेर मर्यादा रखना । २६)सतगुरु ने साहेबके दिये हुये ज्ञान के सिवा मनसे कुछ न करना । ।।५१।।

अत आतर मन साच ।। चित चेतन सुध होई ।।
मन पवना संग साझ ।। दाग दुबध्या नही कोई ।।५२।।

२७) अती आतुर २८) निजमन में विश्वास २९) चित्त को निर्मल रखना–उसमे त्रिगुणीमायाकी वासना नही आने देनी । ३०)चेतन को निर्मल रखना । ३१)मन और श्वास इनको संग करके सतशब्द की साधना करना । ३२) डाग दुबध्या–साहेब के प्रती सुख देनेवाले सत्य या असत्य ऐसे दो बिचार नही रखना ।।।५२।।

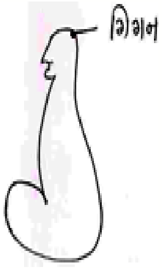

सत बाचा गुरू धरम मे ।। अे चोसट अंग जोय ।।
गिगन बास सुखरामजी ।। सो जन साहिब होय ।।५३।।

गुरु धर्म रखना और सत्य वचन बोलना । यह ऐसे चोसठ स्वभाव जिनमे दिखाई देते ओर उनका शब्द गिगन में निवास कर रहा है,वे संत साहेब ही है ।।।५३।।

आठ अंग चोसट लछ लियां ।। सो नर राम केहे ।।

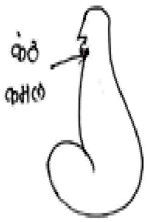

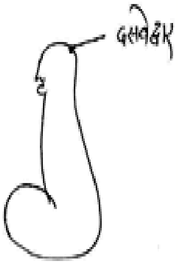

जन सुखराम धिन नर जुग मे ।। गिगन मंडळ घर कर हे ।।५४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि निचे बताये नुसार आठ स्वभाव और आठ स्वभाव के चौसठ लक्षण लेकर जो मनुष्य राम नाम कहेगा और कंठस्थान छोड्के गिगन मंड्ल याने दसवेद्वार घर करेगा वह मनुष्य धन्य है ।।।५४।।

सीळ साच संतोष भाव सो ।। प्रेम प्रित चित लीन ।।
जन सुखराम दया घट जरणा ।। आठ अंग अे चिन ।।५५।।

१)शील(ब्रम्हचर्यसे रहना) २)सांच(विश्वास ३)संतोष ४)भाव ५)प्रेमप्रीत ६)चित्तलीन ७) दया रखना८)जरना रखना याने सहन करना ये ऐसे आठ तरह के स्वभाव है,वह पहचान लो ।५५।

दोहा ।।

अंग अंग के आसरे ।। आठ आठ लछ जाण ।।
सुखराम दास न्यारा करो ।। सब लछ अंग पिछाण ।।५६।।

इस एक एक स्वभाव से आठ आठ लक्षण उपजे है यह समझो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज इस आठ स्वभाव के अलग अलग आठ आठ लक्षण याने सब मिलके ६४ लक्षण है उनके स्वभाव चिनो याने समजो ऐसे सभी संतो को कह रहे है ।।।५६।।

बेण नेण सीतळ दसा ।। हास मगन नही नेहे ।।
सुखराम काम व्यापे नही ।। सील अंग लछ अेहे ।।५७।।

शिल याने ब्रम्हचर्य के निम्न आठ लक्षण है ।

१)बेण-काम रहीत वैरागी बोलना २)नयन-काम प्रकृती की न रखते वैरागी प्रकृतीकी रखना । ३) शितल-घट में काम प्रकृती को शितल रखना । ४) दशा-घट और मन की दशा कामहिन याने शांत रखना और विज्ञान वैराग्य से तेज रखना । ५) न हास्य-काम जागृत होवे ऐसा हास्य नही करना । ६) मग्न-विज्ञान वैराग्य में मग्न रहना । ७) स्नेह-किसीसे काम प्रकृतीसे स्नेह नही करना । ८) काम व्यापे नही-अन्य कोई भी चरित्र जिससे काम व्यापेगा यह नही करना । इसप्रकार के आठ लक्षण शिल के है ।।।५७।।

ज्ञान ध्यान गुण नेम ।। अरथ आदर निर्मोही ।।
भे अंतर सुखराम के ।। साच अेसा लछ होई ।।५८।।

विश्वास के आठ लक्षण है ।

१) ज्ञान-विज्ञान ज्ञान में भीने रहना । २)ध्यान-विज्ञान ध्यान में भिने रहना । ३)गुण-संता के द्वारा सतस्वरुप के गुण प्रगट करना और त्रिगुणी माया तथा मन और ५ आत्मा के सभी काल के मुख में डालनेवाले गुण नाश करना । ४) नेम-आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने बाणीजी में बताये हुये सभी नियम पालना । ५)अर्थ ६)आदर-सतगुरु और सतस्वरुपी संतो का आदर करना । ७)निर्मोही-पत्नी,पुत्र,धन,राज आदि चिजोसे मोह निकाल लेना । ८)भय-सतगुरु और परमात्मा का भय सदा रखना ।।।५८।।

धिरज धरम निर पख हे ।। ने: चळ ध्यान सधीर ।।
अे लछ हे संतोष का ।। सुखदेव चळे न बीर ।।५९।।

संतोष के आठ लक्षण

१) धीरज-२)धर्म-३)निरपक्ष-४)निश्चल-५)ध्यान-६)सधीर-७)चलायमान-किसी भी लोभ से चलायमान न होना । यह संतोष के आठ लक्षण है ।।।५९।।

सुरत निरत मे रख रे ।। अत आतर चित चाय ।।
भाव लछ सुखराम के ।। सब सूं शीस निवांय ।।६०।।

भाव रखनेके आठ लक्षण

१)सुरत २)निरत-(निहारना) ३)मन मे रखना-४)अती आतुर ५)चित्त रखना ६)चाहा रखना ७) सभी से मस्तक नमानाये ऐसे भाव के आठ लक्षण है ।।।६०।।

प्रसण प्रगळ लीनता ।। चाह गरज बिज्ञन ।।
प्रेम लछ सुखरामजी ।। आदर सब को मान ।।६१।।

प्रेम के भी आठ लक्षण है ।

१) प्रसन्न रहना २) पिघला हुवा रहना ३)लीन बनकर रहना ४) चाहा रखना ५) गरज

करना ६) विज्ञान ७) आदर ८) मान रखना यह प्रेम के आठ लक्षण है |||६१||

सुध बुध सांसो बीसरे || सोग मन डर त्रास ||
प्रित लछ सुखरामजी || लगी एक सूं आस ||६२||

प्रिती के आठ लक्षण ऐसे है,१) सुद न रहना २) बुध्दी न रहना ३) संशय न रहना ४) भूल जाना ५) सोग न रहना ६) मन मे भय न रहना ७) मन मे तकलीफ न रहना ८) एक की आशा लगी रहना |||६२||

तलब तत ताकीद बोहो || अण बेदो न सुवाय ||
बित्त लछ सुखरामजी || आठ पोहर हर गाय ||६३||

चित्त के आठ लक्षण

१)तलब लगी रहना २)तत ३)ताकीद(बहुत जल्दी लगी रहती) ४)अणबेदो-(गलबला न होना ५) न सुहाय- दुसरा कुठ भी अच्छा नही लगना । ६) अष्टोप्रहर हर गाना |||६३||

दान मान क्रणा करे || कष्ट सुध प्रतीत ||
दया लछ सुखराम के || हार चले नही जीत ||६४||

दया के आठ लक्षण

१)दान देना २)मान-परमात्माके जीव का मान रखना । यह समजता की हर जीव परमात्माका है । माया कम जादा है इसलिए मान कम जादा नही रखना । ३)करुणा ४)कष्ट-जिसे दया रहती उसे दुजेको कष्टमे देखते खुदके कष्ट लेते । ५) प्रतीत ६) शुध्द-हर प्राण के लिए शुध्द रहता माया के मतलब से नही रहता । ७) हार-खुदकी हार हुयी हार हुयी याने दुजे की जीत हुयी उसके जीत के गुण गाता ऐसे दया रहती । ८)जीत-खुदकी जीत हुयी मतलब दुजेकी हार हो गयी फिर भी हार होनेवाले व्यक्तीके प्रती दया रहती दयावान की सोच यह बनती ||६४||

सुस तो सितळ बुध भे || चाय लेण बूहार ||
जरणा लछ सुखराम जी || खिवण निवण मन मार ||६५||

जरणा के आठ लक्षण

१) सुस्त-साहेब पानेसे माया पानेके लिए किसने उचकाया तो भी वह पानेके लिए उछलता नही । साहेब पानेके कारण इसको किसीने कितना भी भला बुरा किया तो भी वह रीॲक्ट (**React**)नही करता । सोचता की जो निंदा कर रहा है वह भोला है-समज नही है-नासमज है । २)शीतल ३)बुध्दभय-साहेब नाराज न होवे यह भय उसके बुध्दीमे बना रहता । ४)चाहणा ५)व्यवहार ६)खिंवण ७) निमन ८) मन को मारना ||६५||

आठ अंग ये साध मे || चोसट लछ समेत ||
सुखराम साध की पारखा || सबद चाल सहेत ||६६||

साधु में सतशब्द के साथ आठो स्वभाव के सभी ६४ लक्षण प्रगट है तो ही वह साधु है

यह परीक्षा करो ।।।६६।।

अे अंग लछण ऊर ऊपजे ।। मोय मिलन के काज ।।
सुखराम प्रख चौडे धरी ।। सो जन जुग म्हाराज ।।६७।।

ये स्वभाव लक्षण जिस घट मे मुझे मिलने के लिये उपजे तो सतगुरु सुखरामजी महाराज ने यह साधु की परीक्षा खुल्ली की,कि ये सतशब्द के साथ स्वभाव और लक्षण जिस साधु मे है वही साधु जगत में महाराज है ।।।६७।।

आठ अंग लछ साध के ।। चोसट सुबद सहेत ।।
सो साचा सुखराम के ।। निर्मळ साधू हेत ।।६८।।

आठ स्वभाव और ६४ लक्षण के साथ सतशब्द जिस साधु के घट में है वही सच्चे साधु है तथा वही निर्मल साधु है ।।।६८।।

अे लछण हर मिलन का ।। अष्ट अंग लव लीन ।।
पाया तो सुखराम के ।। वे लछ न्यारा चिन ।।६९।।

जगत में आठो स्वभाव और उनके ६४ लक्षण मे लवलीन है ऐसे अनेक साधु है परंतु आठो स्वभाव और उनके ६४ लक्षणो मे लवलीन रहकर सतशब्द प्राप्त करते वह लक्षण याने आठो स्वभाव के साथ सतशब्द प्राप्त करना यह जगत के आठो स्वभाव और उनके ६४ लक्षणो में लवलीन है उनसे बहोत न्यारा है यह सभी ज्ञानी,ध्यानी नर नारीया समजो ।।।६९।।

पाया प्रचा बेण क्हे ।। मुख बरसे चख तेज ।।
सदा सुख सुखराम के ।। अणभे कागद भेज ।।७०।।

ऐसे साधू साहेब पाने के परचे जगत मे बोलते तथा उनके मुख पे और आँखो में सतस्वरुप का तेज बरसता । उस साधु को साहेब पाने का सुख हमेशा रहता ।।।७०।।

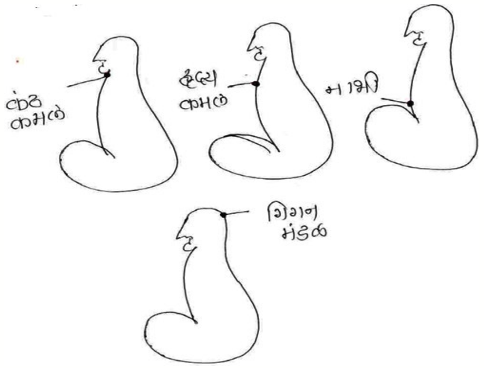

मगन भया मन मांय ही ।। अंतर ध्यान चढाय ।।
अब पाया सुखराम के ।। गिगन मंडळ घर जाय ।।७१।।

ऐसे साधु का निजमन परमात्मा मे सदा मगन रहता । ये साधु अंतर मे याने देह मे ही ध्यान चढाकर गिगन मंडल के घर मे पहुँचता और साहेब को पुरे घट में पाता ।।।७१।।

पाया की पारख सुणो ।। सबद बाज सेनाण ।।
ऊँ देऊं सुखराम के ।। भारी बोल पीछाण ।।७२।।

साहेब पुरे घट मे प्राप्त हुवा इसकी यह परीक्षा है कि उसके पुरे घट मे सतशब्द के ध्वनी का आवाज गरजता तथा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि पानेवाले के देह से अनमोल ऐसे अगमदेश के भारी बोल निकलते ।।।७२।।

आट पोहर रहे अेकसा ।। बदन पलटे नांय ।।
रूप चडे सुखरामजी ।। दिन दिन दुणा मांय ।।७३।।

ऐसे संतका देह आठोप्रहर याने २४ ही घंटा एकसरीखा साहेब पाया इस स्वभावका रहता। उसके देह मे जरासा भी होनकाली स्वभाव का बदल नही व्यापता उलटा दिन दिन उसके रुप दुना दुना तेजवान बनता ।।।७३।।

दिष्ट तेज मुख भळ हळे ।। बायक वचन सतोल ।।
पूंता लछ सुखरामजी ।। भ्रम ताक दे खोल ।।७४।।

उसकी दृष्टी बहोत तेज हो जाती और उनके मुखका तेज झलकने लगता । उसके वाक्य, बचन तोलमोल के भारी न्यायिक रहते । पहुँचे हुये साधू के यह लक्षण भी है उन्हें कैसा भी भ्रमा हुवा शिष्य मिला तो भी उस शिष्य के सभी भांती भांती के भ्रम के पक्के बंद ताले साहेब के भारी ज्ञानसे सहज खोल देते ।।।७४।।

भक्त बिना मत अंग रे ।। चोसट ही सब झूट ।।
सुणज्यो सब सुख राम के ।। ज्यूं नर खाली मूट ।।७५।।

यदि ये सबही स्वभाव और लक्षण हुये और उनमे भक्ती नही याने सतशब्द नही उनमे उनके यह आठ स्वभाव और चौसठ लक्षण उस साधूको अमरलोक लिजाने के लिये झूठे है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे आठ स्वभाव और ६४ लक्षण परिपूर्णवाले परंतु सतशब्द के भक्तिहिन साधू ये खाली मुठ्ठी के समान है । याने जैसे किसीके मुठ्ठीमें दु:खके समय संसारमे उपयोग में आनेवाले हिरे समान अनमोल वस्तू है वह बंद है इसे भरी मुठ्ठी कहते वैसेही किसी की बंद मुठ्ठी है परंतु खोलने पे दिखा कि उस मुठ्ठी में संसार के दु:ख के काम मे आनेवाले हिरे सरीखी कोई भी अनमोल वस्तू नही है,कवडी के समान जिसकी कोई किंमत नही है ऐसे वस्तू से भरी है ।।।७५।।

निरस चीज सब लेत हे ।। सरसी बिरळा कोय ।।
युं निरगुण सुखराम के ।। सुरगुण भक्ति होय ।।७६।।

इस जगत में निरसी याने हलकी चीज तो सभी कोई लेते लेकिन भारी जिन्नस लेनेवाले बिरले ही जन है । ऐसे ही भक्ती में निरसी और भारी प्रकार है । वह सदा के लिये आवागमन, ८४००००० योनी का दु:ख मिटाती है और महासुख में ले जाती है और सरगुण भक्ती यह हलकी भक्ती है । यह भक्ती वैकुंठके सुखो तक पहुँचाती है परंतु महाकालके मुख में रखती और जनम-मरण के चक्कर में डालती है ।।।७६।।

च्यार ब्रण नर नार में ।। फेर फार नही कोय ।।
हरजी तो सुखराम के ।। प्रेम प्रित बस होय ।।७७।।

चार वर्ण ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य व शुद्र इनमे के किसी भी स्त्री,पुरुषको हरजीसे प्रेम प्रिती होगी उसके वश हरजी हो जाते और उसके घट मे प्रगट हो जाते । इसप्रकार हरजी प्राप्त

 ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। राम

करने मे उंच या निच निच वर्ण के स्त्री या पुरुष मे कुछ भी फेर फार नही है ।।।७७।।

संसकृत काव्य कहूँ ।। तो जुग समझे नांय ।।
ता कारण सुखराम के ।। बोलूं प्राकृत मांय ।।७८।।

हरजी सहज कैसे वश हो जाते? यह काव्य याने अणभै बाणी मै वेद,शास्त्र के तरह संस्कृत में कथ सकता था परंतु यह जगत के सभी लोक संस्कृत समजते नही इसलिये मै प्राकृत में याने सबको समजे ऐसे भाषा में बोल रहा हूँ ।।।७८।।

भूला नर भँवता फिरे ।। हर ढुंढण कूं जाय ।।
साहिब तो सुखराम के ।। नेडा हे तन माय ।।७९।।

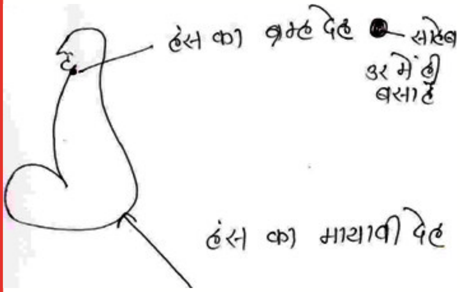

ये सब भुले हुये मनुष्य है । वे हर को ढुँढने के लिये तिर्थ,मंदिर आदि जगह भटकते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है वह साहेब तो अपने बिलकुल नजदिक याने हंस के तन में ही है ।।।७९।।

बाहीर नर ढुंढत फिरे ।। साहेब के ताँई ।।
हर तन मे सुखराम के ।। से सुझे नाही ।।८०।।

कैक मनुष्य साहेब को तनके बाहर ढूँढते फिरते । लेकिन वह साहेब तो अपने हंस के शरीर में ही है तो भी उन्हें वह साहेब सुजता नही ।।।८०।।

सुखराम दास मन जोस हे ।। तब लग क्रणी होय ।।
निर्बळ होय गरिबी गही ।। ज्यांसूं बणे न कोय ।।८१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के नर नारीयों को कहते है कि मायावी मन मे जोर है तब तक मनुष्य मनुष्य ८अंग और ६४ लक्षण पालके वेद शास्त्र में बताई हुई करणीयाँ करता । जब निर्बल हो जाता मतलब मन जोशहिन हो जाता और मन गरीबी धारण करता तब उससे वेदो में बतायी हुई छोटीसी भी करणी नही होती ।।।८१।।

हर की गत सुखराम के ।। मो से लखी न जाय ।।
समझ्या सुरडे पानडा ।। भोळा निज फळ खाय ।।८२।।

उस हर की गती मेरे समज में कुछ आती नही । जो मनुष्य वेदके करणीयो में बहोत समझे हुवे है,होशियार है वे साधु के आठो स्वभाव और उसके ६४ लक्षण भांती भांती से देखते और वे ही असली साधू है समजकर उन्होने बताये हुये वेद के करणीयो मे साहेब खोजते और जो भोले है वे साधू के आठ स्वभाव और ६४ लक्षण देखने में नही लगते । वे सिधा उनमे जो सतशब्द है उसे धारण कर लेते । जैसे–समजवान मनुष्य पेड के पत्तो में लग जाता और पेड का मिठा फल त्याग देता और भोला मनुष्य पेड के पत्तो मे न लगते पेड का निजफल खाता । ।।८२।।

।। इति साधलच्छ के अंग का भाषांतर संपूर्ण ।।